अध्याय - चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना –

शोधकार्य का मुख्य ध्येय किसी समस्या विशेष के संबंध में महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालना होता है तथा महत्वपूर्ण निष्कर्षों को निकालने के लिए प्रदत्तों का सांख्यिकीय विधियों से विश्लेषण करना आवश्यक होता है। किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए आँकड़ों को सारणी में प्रदर्शित करना होता है जिससे अवलोकनकर्ता एक ही दृष्टि में सारणी को देखकर शोधकार्य के निष्कर्ष के बारे में अवगत हो जाता है।

प्रस्तुत शोधकार्य में भी यही किया गया है, ताकि महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकें। प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरणों के माध्यम से अध्ययन हेतु चुने गये न्यादर्श द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया । तत्पश्चात् प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण तथा व्याख्या इस अध्याय में किया गया। सभी परिकल्पनाओं का परीक्षण के आधार पर प्राप्त परिणामों को इस अध्याय में दर्शाया गया। परिणामों की स्पष्टता के लिए उचित ग्राफ भी प्रदर्शित किया गया।

जे. एच. पाईनकर कहते है कि "एक मकान का निर्माण पत्थरों से होता है, किन्तु पत्थरों के ढ़ेर से नहीं वरन् जटिल पत्थरों को सुव्यवस्थित रूप से होता है। वैज्ञानिक तथ्य का निर्माण भी तथ्यों के संकलन उपरान्त उचित विश्लेषण तथा व्याख्या द्वारा होता है।"

पी. व्ही. युंग कहते है कि "संकलित तथ्यों के उचित संस्थिति संबंधों के रूप में व्यवस्थित कर विचारपूर्ण आधारशिला की स्थापना करना ही विश्लेषण है, अर्थात् विश्लेषण शोध का सृजनात्मक पक्ष है।"

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

प्रश्नावली के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा (6 माध्यमिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों द्वारा) एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या।

विभाग 'अ'

शोधकर्ता नें प्रश्नावली के माध्यम से विद्यार्थियों का दण्ड के प्रकार के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु 10 वैकल्पिक प्रश्नों का निर्माण किया जिसके द्वारा विद्यालय के अंतर्गत कौन कौन से दण्ड दिये जाते हैं तथा कौन सा दण्ड अधिक मात्रा में दिया जाता है इसकी स्पष्टता इन आंकड़ों द्वारा की गई है जो निम्नानुसार है –

तालिका क्रमांक –4.1

कक्षा नवमीं के छात्रों का दण्ड के प्रकारों के बारे में विवरण

क्रमांक	दण्ड के प्रकार	प्रतिशत
1.	शारीरिक दण्ड	30.2%
2.	मानसिक दण्ड	50.4%
3.	शाब्दिक दण्ड	12.5%
4.	नाणाकिय दण्ड	5.9%
5.	शारीरिक और मानसिक दण्ड	1%

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि कक्षा नवमीं के छात्रों का मानना है कि शाला के अंतर्गत 30.2% शारीरिक दण्ड, 50.4% मानसिक दण्ड, 12.5% शाब्दिक दण्ड, 5.9% नावाकीय दण्ड तथा 1% शारीरिक और मानसिक दोनों दण्ड दिया जाता है।

कक्षा नवमीं के छात्रों का दण्ड के प्रकारों के बारे में विवरण

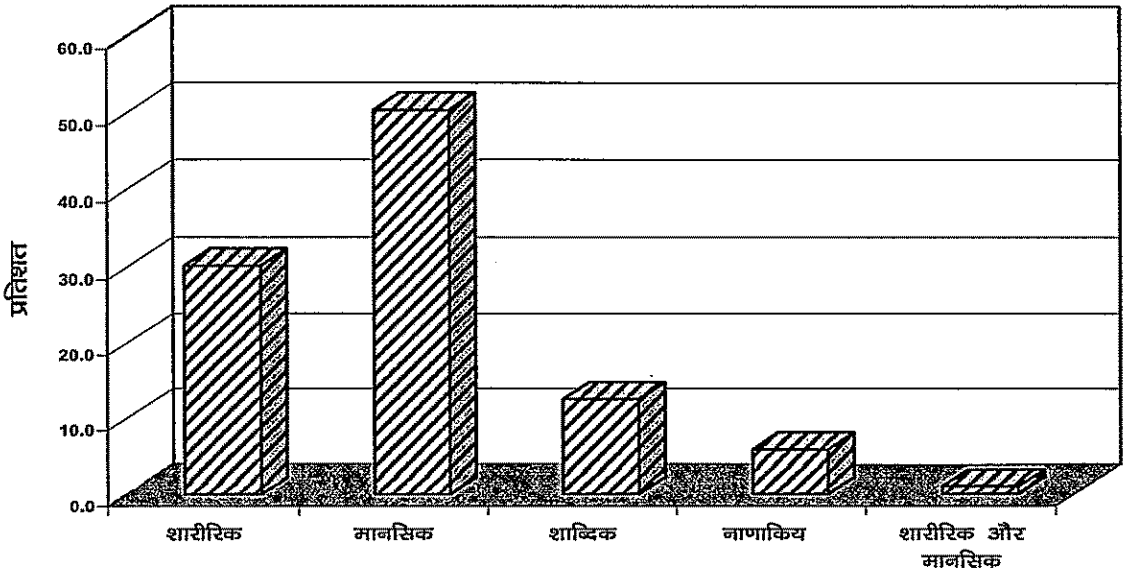

Figer no. 1

तालिका क्रमांक –4.2

कक्षा नवमीं की छात्राओं का दण्ड के प्रकारों के बारे में विवरण।

क्रमांक	दण्ड के प्रकार	प्रतिशत
1.	शारीरिक दण्ड	32.5%
2.	मनसिक दण्ड	50.2%
3.	शाब्दिक दण्ड	11.5%
4.	नाणाकिय दण्ड	4.7%
5.	शारीरिक और मानसिक दण्ड	1.1%

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि कक्षा नवमीं की छात्राओं का मानना है कि शाला के अंतर्गत 32.5% शारीरिक दण्ड, 50.2% मानसिक दण्ड, 11.5% शाब्दिक दण्ड, 4.7% नाणाकीय दण्ड तथा 1.1% शारीरिक और मानसिक दोनों दण्ड दिया जाता है।

कक्षा नवमीं की छात्राओं का दण्ड के प्रकारों के बारे में विवरण

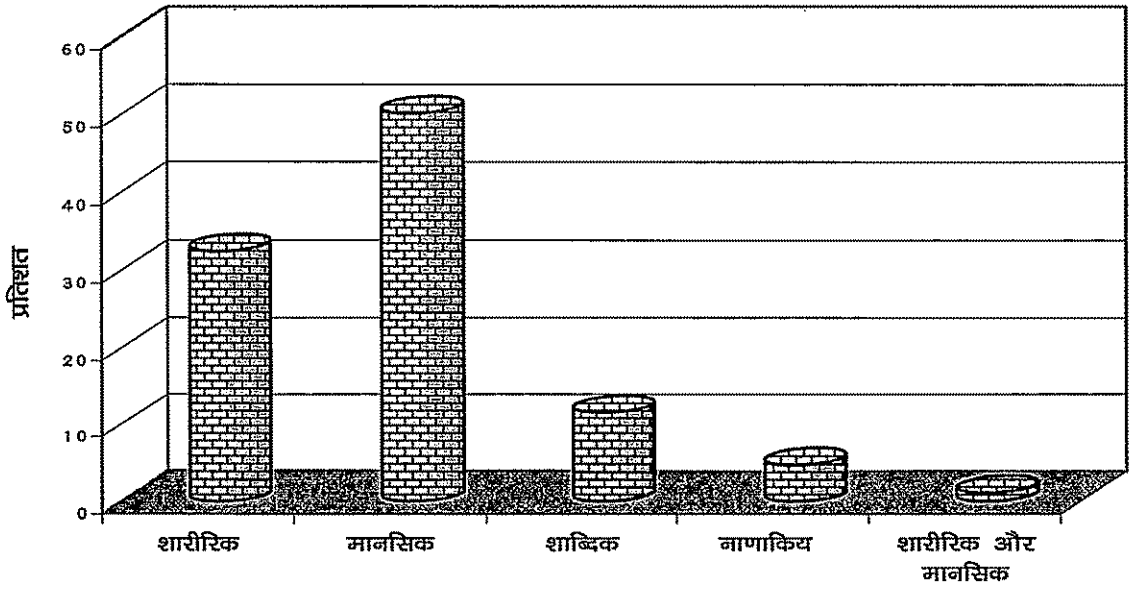

Figer no.2

इस प्रकार प्रदत्तों का अवलोकन करने पर जो आँकड़े प्राप्त हुये इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयों में मानसिक दण्ड सबसे ज्यादा दिया जाता है तथा वह दण्ड जो इनके मानसिक विकास एवं स्वास्थ्य पर गहरा असर करता है।

स्वनिर्मित उपकरण में शोधकर्ता ने छात्रो के दण्ड के प्रति अभिप्राय प्राप्त करने हेतु 30 विधानों को प्रयुक्त किया जिसमें 16 सकारात्मक एवं 14 नकारात्मक विधान शामिल किये गयें। विश्लेषण करने हेतु अनुस्थिति मापनी का प्रयोग करके अंक प्राप्त किये गये। सकारात्मक एवं नकारात्मक प्राप्तांकों के आधार पर प्रतिशत प्राप्त किया गया जो निम्नांकित है।

तालिका क्रमांक – 4.3

छात्र एवं छात्राओं का दण्ड के
सकारात्मक व नकारात्मक अभिप्रायों का विश्लेषण

	छात्र (100)	छात्राऐं (100)
	प्रतिशत (%)	प्रतिशत (%)
सकारात्मक अभिप्राय	60.21	60.12
नकारात्मक अभिप्राय	39.79	39.88

इस तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 60.21% छात्र दण्ड के विरूद्ध में है तथा 39.79% छात्र दण्ड होने के पक्ष में है। 60.12% छात्राऐं दण्ड के विरूद्ध में है तथा 39.88% छात्राऐं दण्ड होने के पक्ष में है। इस तालिका से ये भी स्पष्ट होता है कि छात्र और छात्राओं के अभिप्राय में अधिक अंतर नहीं है।

स्वनिर्मित उपकरण के अंतर्गत शोधकर्ता ने शिक्षकों के दण्ड के प्रति अभिप्राय प्राप्त करने हेतु 30 विद्यानों का प्रयोग किया जिसमें 14 सकारात्मक एवं 16 नकारात्मक विद्यान शामिल किय गये।

छात्र एवं छात्राओं का दण्ड के सकारात्मक व नकारात्मक अभिप्रायों का विश्लेषण

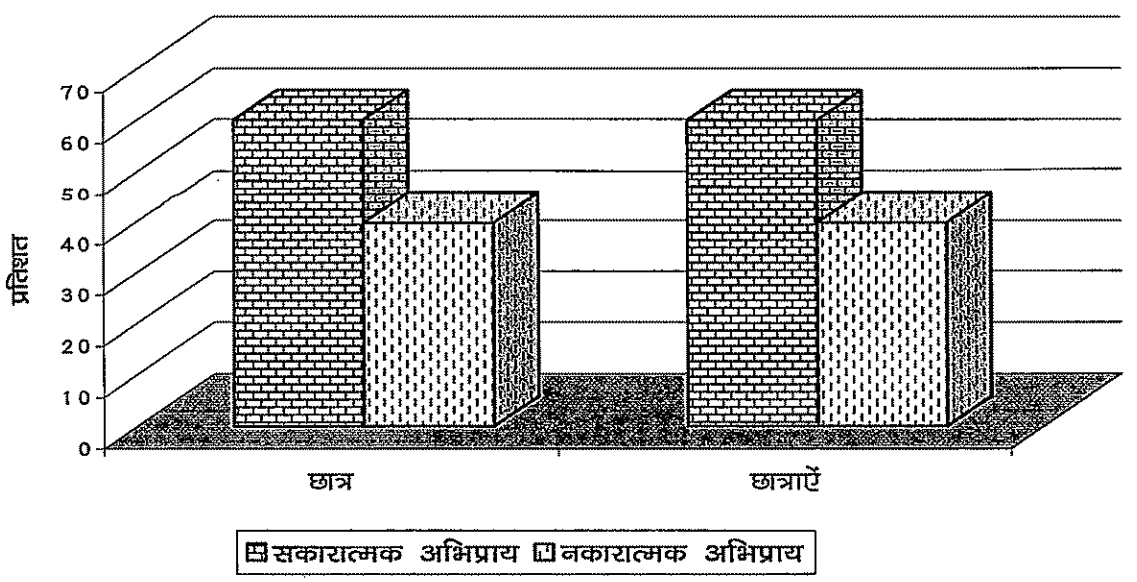

Figer no. 3

तालिका क्रमांक 4.4

पुरूष शिक्षक एवं महिला शिक्षिकाओं का

दण्ड के सकारात्मक व नकारात्मक अभिप्रायों का विवरण निम्नानुसार है

	पुरूष शिक्षक (30)	महिला शिक्षक (20)
	प्रतिशत (%)	प्रतिशत (%)
सकारात्मक अभिप्राय	54.52	54.67
नकारात्मक अभिप्राय	45.48	45.33

इस तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 54.52% शिक्षक दण्ड देने के विरूद्ध में है तथा 45.48% दण्ड देने के पक्ष में है। और 54.67% शिक्षिकाऐं दण्ड के विरूद्ध में तथा 45.33% दण्ड देने के पक्ष में है। इस तालिका से ये भी स्पष्ट होता है कि शिक्षक और शिक्षिकाओं के अभिप्राय में अधिक अंतर नहीं है।

पुरूष शिक्षक एवं महिला शिक्षिकाओं का दण्ड के सकारात्मक व नकारात्मक अभिप्रायों का विवरण

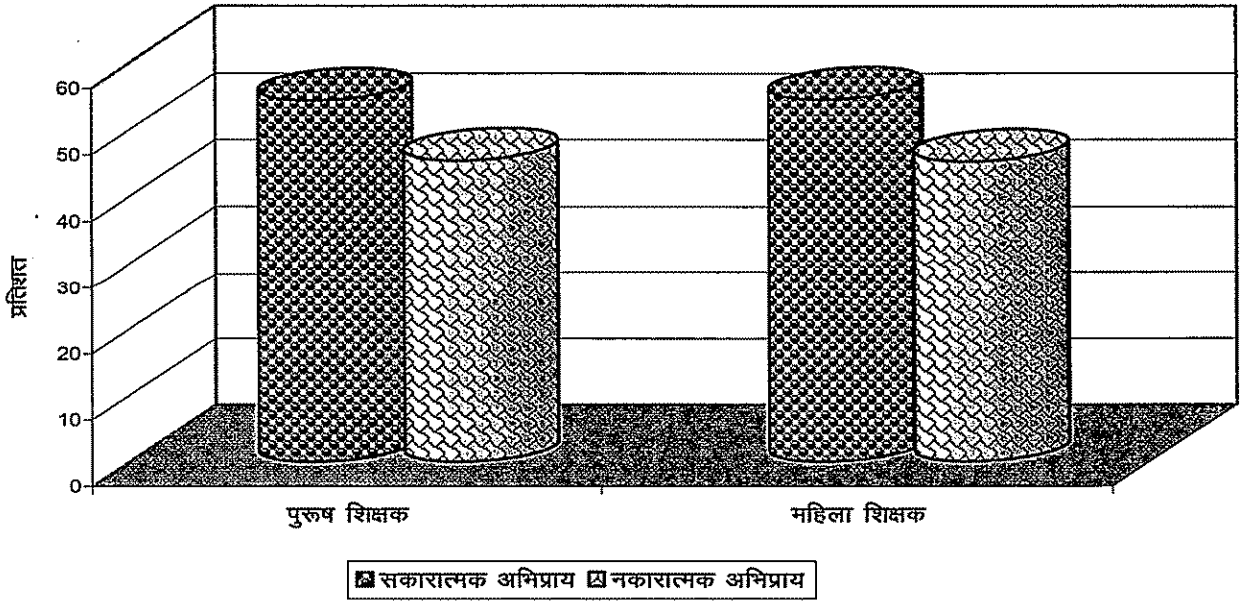

Figure no. 4

विभाग 'ब'

मनुष्य के विचारों, मंतव्यों व अभिप्रायों पर उसकी सामाजिक व व्यावयायिक पृष्ठभूमि का प्रभाव दिखाई देता है। इस विधान की स्पष्टता के आधार पर व वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर शोधकर्ता नें सामाजिक पृष्ठभूमि लिंग, स्थान तथा व्यावसायिक पृष्ठभूमि विद्यालय का प्रकार, शिक्षण का माध्यम, शैक्षणिक अनुभव और विषय के माध्यम से उनके अभिप्रायों का विवरण किया गया है जो इस प्रकार है –

समाज में लिंगभेद अधिक व्यापक स्तर पर पाया जाता है। सामाजिक या मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ही दोनों के मंतव्यों में अंतर पाया जाता है इसी मान्यता को आधार बनाकर शोधकर्ता नें लिंग के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में प्रभाव देखने का प्रयास किया है जो निम्नानुसार है –

परिकल्पना क्रमांक –1

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक –4.5

पुरूष और महिला शिक्षकों

के बीच दण्ड के अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता ।

क्रमांक	लिंग	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मुक्तांश	t मान	निष्कर्ष
	(Sex)	(M)	(SD)	(N)	(df)	(t)	(Sig)
1.	पुरूष	56.4	8.30	30	48	2.06	सार्थक अंतर है (S)*
2.	महिला	60.55	5.93	20			

– 0.01 स्तर पर 2.704

– 0.05 स्तर पर 2.021

इस तालिका में "t" का मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है इसलिए परिकल्पना को अस्वीकृत करते है। दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में पुरूष और महिला के बीच में सार्थक अंतर है। जबकि 0.01 सार्थकता स्तर पर "t" का मूल्य सार्थक नहीं है।

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों नें वातावरण के महत्व के संबंध में अनेक अध्ययन और परीक्षण किये हैं। इनके आधार पर उन्होनें सिद्ध किया है कि व्यक्ति के प्रत्येक पहलू पर भौगोलिक वातावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है। इस विधान के आधार पर शोधकर्ता नें स्थान का दण्ड के अभिप्राय पर प्रभाव देखने का प्रयास किया है जो इस प्रकार है –

परिकल्पना क्रमांक – 2

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में स्थान के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में काई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक – 4.6

ग्रामीण और शहरी शिक्षकों

के बीच दण्ड के अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता

क्र.	स्थान	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मुक्तांश	t मान	निष्कर्ष
	(Place)	(M)	(SD)	(N)	(df)	(t)	(Sig)
1.	ग्रामीण शिक्षक	58.2	7.49	38	48	0.18	सार्थक अंतर नही है (NS)
2.	शहरी शिक्षक	57.7	8.40	12			

– 0.01 स्तर पर 2.704

– 0.05 स्तर पर 2.021

इस तालिका में "t" का मूल्य सार्थक नहीं है। इसलिए परिकल्पना को स्वीकृत करते है। दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के बीच में सार्थक अंतर नहीं है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों के अभिप्राय भिन्न-भिन्न हो सकते हैं क्योंकि दोनों विद्यालयों का उद्देश्य एक होता है परंतु प्रक्रिया में अलगपन देखने को मिलता है। शोधकर्ता नें इसका विश्लेषण निम्नानुसार किया है –

परिकल्पना क्रमांक –3

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में विद्यालय के प्रकार के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक – 4.7

शासकीय और अशासकीय विद्यालयों

के शिक्षकों के बीच दण्ड के अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता।

क्र.	विद्यालय का प्रकार	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मुक्तांश	t मान	निष्कर्ष
		(M)	(SD)	(N)	(df)	(t)	(Sig)
1.	शासकीय	58.8	7.5	40	48	1.34	सार्थक अंतर नहीं है (NS)
2.	अशासकीय	55.2	7.6	10			

– 0.01 स्तर पर 2.704

– 0.05 स्तर पर 2.021

इस तालिका में "t" का मूल्य सार्थक नहीं है, इसलिए परिकल्पना की स्वीकृत करते है। दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों के बीच में सार्थक अंतर नहीं है।

शिक्षा का माध्यम एक महत्वपूर्ण कारक होता है माध्यम के द्वारा व्यक्ति के विचारों व मंतव्यों में अलगपन पाया जाता है जिसको शोधकर्ता नें इस प्रकार स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

परिकल्पना क्रमांक – 4

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षा के माध्यम के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक – 4.8

गुजराती एवं अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों के बीच दण्ड के अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता –

क्र.	माध्यम	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मुक्तांश	t मान	निष्कर्ष
		(M)	(SD)	(N)	(df)	(t)	(Sig)
1.	गुजराती	58.1	7.89	39	48	0.08	सार्थक अंतर नहीं है (NS)
2.	अंग्रेजी	57.9	7.05	10			

– 0.01 स्तर पर 2.704

– 0.05 स्तर पर 2.021

इस तालिका में "t" का मूल्य सार्थक नहीं है इसलिए परिकल्पना को स्वीकृत करते है। दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में गुजराती एवं अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों के बीच में सार्थक अंतर नहीं है।

शैक्षिक अनुभव का भी अभिप्राय पर प्रभाव पड़ता है। नये व युवा शिक्षक दण्ड के विरोध में तथा पुराने व प्रौढ़ शिक्षक दण्ड देने के पक्ष में होते हैं। ऐसी मान्यता प्रचलित है। इस विधान की स्पष्टता करने हेतु शोधकर्ता नें शैक्षिक अनुभव का दण्ड के अभिप्राय पर क्या प्रभाव पड़ता है इस बारे में जो विवरण दिया गया है वह निम्नांकित है –

परिकल्पना क्रमांक –5

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक – 4.9

शिक्षकों के अनुभव के आधार पर दण्ड के अभिप्राय की सार्थकता

चरिता के स्रोत	वर्गों का योग	आवृत्ति अंश	मध्यमान वर्गों का योग	F मान	निष्कर्ष
(Sources)	(SS)	(df)	(MS)	(F)	
मध्य (Between)	48.88	2	24.44	0.39	सार्थक अंतर नही है। (NS)
आन्तरिक (Within)	2924.8	47	62.23		
योग (Total)	2973.68				

– 0.01 स्तर पर 99.5

– 0.05 स्तर पर 19.5

इस तालिका से "F" का मूल्य 0.39 आवृत्ति df (2,47) तालिका के "F" के दोनों मानों से कम है। अतः परिकल्पना को स्वीकृत करते है दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में शिक्षकों के अनुभव का अभिप्राय के बीच में सार्थक अंतर नहीं है।

विषयों के आधार पर भी शिक्षकों के अभिप्राय में भिन्नता पाई जाती है। शिक्षा जगत में यह मान्यता होती है कि विज्ञान, गणित, अंग्रेजी तथा शारीरिक स्वास्थ्य शिक्षण के शिक्षक अधिक दण्ड देते हैं, भाषा शिक्षक व सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों की तुलना में।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधकर्ता को कुल 10 विषयों के शिक्षकों का अभिप्राय प्राप्त किया जिसमें गुजराती, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, शारीरिक स्वास्थ्य शिक्षण, चित्र और कम्प्यूटर शिक्षकों को शामिल किया गया।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

परिकल्पना क्रमांक – 6

माध्यमिक विद्यालायों के विषय के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में कोई सार्थक अंतर नही है।

तालिका क्रमांक – 4.10

शिक्षकों के विषय के आधार पर दण्ड के अभिप्राय की सार्थकता

चरिता के स्रोत (Sources)	वर्गो का योग (SS)	आवृत्ति अंश (df)	मध्यमान वर्गो का योग (MS)	F मान (F)	निष्कर्ष
मध्य (Between)	427.38	9	47.49	0.02	सार्थक अंतर नहीं है। (NS)
आन्तरिक (Within)	92546.3	40	2313.66		
योग (Total)	92973.68				

– 0.01 स्तर पर 4.57

– 0.05 स्तर पर 2.83

इस तालिका में "F" का मूल्य 0.02 आवृत्ति df (9, 40) तालिका के "F" के दोनो के मानो से कम है। अतः परिकल्पना को स्वीकृत करते है। दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में विषयों का शिक्षकों के अभिप्राय के बीच सार्थक अंतर नहीं है।

विद्यार्थियों के अभिप्राय का विश्लेषण लिंग, विद्यालय के प्रकार तथा शिक्षा के माध्यम के आधार पर किया गया है। एक ही व्यक्ति का विभिन्न चरों के संदर्भ में अलग-अलग अभिप्राय होता है जिसका विवरण आगे दिया है।

विभाग 'स'

समाज में लिंगभेद अधिक व्यापक स्तर पर पाया जाता है। सामाजिक या मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ही दोनों के मंतव्यों में अंतर पाया जाता है इसी मान्यता

को आधार बनाकर शोधकर्ता नें लिंग के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में प्रभाव देखने का प्रयास किया है जो निम्नानुसार है –

परिकल्पना क्रमांक – 7

माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों मे लिंग के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक – 4.11

छात्राओं और छात्रों के बीच में दण्ड के अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता –

क्र.	लिंग	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	संख्या (N)	मुक्तांश (df)	t मान (t)	निष्कर्ष (Sig)
1.	छात्राऐं	59.85	6.77	100	198	0.197	सार्थक अंतर नहीं है (NS)
2.	छात्र	59.67	6.022	100			

– 0.01 स्तर पर 2.576

– 0.05 स्तर पर 1.960

इस तालिका में "t" का मूल्य सार्थक नहीं है। इसलिए परिकल्पना को स्वीकृत करते है। दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में छात्राओं और छात्रों के बीच में सार्थक अंतर नहीं है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिप्राय में भिन्नता पाई जाती है क्योंकि अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सोच विचार व मंतव्य में अंतर पाया जाता है। शोधकर्ता नें इसका विश्लेषण निम्नानुसार किया है–

परिकल्पना क्रमांक – 8

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रकार के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक – 4.12

शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के

विद्यार्थियों के बीच दण्ड के अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता

क्रम	विद्यालय का प्रकार	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मुक्तांश	t मान	निष्कर्ष
		(M)	(SD)	(N)	(df)	(t)	(Sig)
1.	शासकीय	58.8	6.99	90	198	1.85	सार्थक अंतर नहीं है (NS)
2.	अशासकीय	60.5	5.76	110			

– 0.01 स्तर पर 2.576

– 0.05 स्तर पर 1.960

इस तालिका में "t" का मूल्य सार्थक नंही है इसलिए परिकल्पना को स्वीकृत करते है दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच में सार्थक अंतर नही है।

शिक्षा का माध्यम एक महत्वपूर्ण कारक होता है। अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी गुजराती माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में मुक्त विचारशैली के होते हैं। इसलिये दोनों माध्यम के विद्यार्थियों के अभिप्राय में अंतर पाया जाता है। शोधकर्ता नें इसको आधार बनाकर माध्यम का दण्ड के अभिप्राय पर प्रभाव देखने का प्रयास किया है, जो इस प्रकार है –

परिकल्पना क्रमांक – 9

माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों में माध्यम के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक –4.13

गुजराती और अंग्रेजी माध्यम के

विद्यार्थियों के बीच में दण्ड के अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता

क्र.	माध्यम	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मुक्तांश	t मान	निष्कर्ष
		(M)	(SD)	(N)	(df)	(t)	(Sig)
1.	अंग्रेजी (शहरी)	60.6	5.68	100	198	2.02	सार्थक अंतर है (S)*
2.	गुजराती (ग्रामीण)	58.92	6.12	100			

– 0.01 स्तर पर 2.576

– 0.05 स्तर पर 1.960

इस तालिका में "t" का मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है इसलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में अंग्रेजी और गुजराती माध्यम के विद्यार्थियों के बीच मे सार्थक अंतर है।

4.3 परिणामों की व्याख्या

प्रदत्तों के विश्लेषण के बाद उनकी वयाख्या निम्नांकित रूप से कि गई है जो इस प्रकार है।

तालिका 4.1 से यह स्पष्ट होता है कि कक्षा नवमी के छात्रों का दण्ड के प्रकारों के बारे में क्या अभिप्राय है। छात्रों के मतानुसार विद्यालयों में मानसिक दण्ड सबसे ज्यादा दिया जाता है।

तालिका 4.2 से यह स्पष्ट होता है कि कक्षा नवमीं की छात्राओं का दण्ड के प्रकारों के बारे में क्या अभिप्राय है। छात्राओं का मानना है कि विद्यालयों में मानसिक दण्ड सबसे ज्यादा दिया जाता है।

तालिका 4.3 से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राऐं अधिकतर दण्ड देने के विरूद्ध में है।

तालिका 4.4 से यह स्पष्ट होता है कि माध्यकि विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकायें अधिकतर दण्ड देने के विरूद्ध मे है।

तालिका 4.5 से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के बीच में दण्ड के अभिप्राय के बारे सार्थक अंतर है। यदि हम प्रदत्तों का अवलोकन करें तो अंतर स्पष्ट रूप से नजर आता है और परिणाम की पुष्टि होती है।

तालिका 4.6 से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के बीच में स्थान तथा दण्ड के अभिप्राय मे सार्थक अंतर नहीं हैं प्रदत्तों का अवलोकन करे तो यह अंतर नजर आता है।

तालिका 4.7 से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के बीच दण्ड अभिप्राय के बारे में सार्थक अंतर नहीं है। यदि हम प्रदत्तों का अवलोकन करें तों अंतर स्पष्ट रूप से नजर आता है और परिणाम की पुष्टि होती है।

तालिका 4.8 से यह स्पष्ट होता है कि गुजराती और अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के बीच दण्ड के अभिप्राय के बारे में सार्थक अंतर नहीं है। प्रदत्तों के अवलोकन करने पर यह अंतर नजर आता है और परिणाम की पुष्टि होती है।

तालिका 4.9 से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के अनुभव और दण्ड के अभिप्राय के बीच सार्थक अंतर नहीं है। इसका अर्थ है कि दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में अनुभव का दण्ड के अभिप्राय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका 4.10 से से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के विषय और दण्ड के अभिप्राय के अध्ययन में विषयों का शिक्षक के अभिप्राय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका 4.11 से यह स्पष्ट होता है कि कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों का लिंग और दण्ड के अभिप्राय के बीच में सार्थक अंतर नहीं है। छात्र और छात्राओं के अभिप्राय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों के लिंग भेद का अभिप्राय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 4.12 से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच दण्ड के अभिप्राय के बारे में सार्थक अंतर नहीं है। यदि हम प्रदत्तों का अवलोकन करें तो अंतर स्पष्ट रूप से नजर आता है और परिणाम की पुष्टि होती है।

तालिका 4.13 से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालय के कक्षा नौवी के विद्यार्थियों का शिक्षा के माध्यम गुजराती और अंग्रेजी का दण्ड के अभिप्राय के बीच में सार्थक अंतर होता है। अतः 0.05 स्तर पर "t" मान सार्थक है। इसका अर्थ है कि माध्म का दण्ड के अभिप्राय पर प्रभाव पड़ता है। प्रदत्तों का अवलोकन करने पर यह अंतर नजर आता है और परिणाम की पुष्टि होती है।

तालिका क्र. 4.5 और 4.11 के अनुसार शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर दण्ड की अभिप्राय का परिणाम भिन्न पाया गया। शिक्षकों में लिंग के आधार पर दंड के अभिप्राय में सार्थक अंतर है तथा विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर दंड के अभिप्राय में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्र. 4.8 और 4.13 के अनुसार शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के शिक्षा के माध्यम के आधार पर दण्ड के अभिप्राय का परिणाम भिन्न पाया गया शिक्षकों में माध्यम के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में सार्थक अंतर नहीं है तथा विद्यार्थियों में माध्यम के आधार पर दण्ड के अभिप्राय में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है।

परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक जो शिक्षा का प्राणाधार है तथा विद्यार्थी जो राष्ट्र के भविष्य का निर्माता है दोनों के दण्ड के अभिप्राय में समानता पाई गई है दोनों ही दंड के विरूद्ध तथा दोनों ही दण्ड के पक्ष में हैं।